काम का बँटवारा

राजगृह में धन्ना नामक चतुर समृद्धिशाली व्यापारी रहता था। उसके धनपाल, धनदेव, धनगोप एवं धनरक्षित नाम के चार पुत्र और पुत्र-वधुओं आदि का भरा-पूरा सुखी परिवार था।

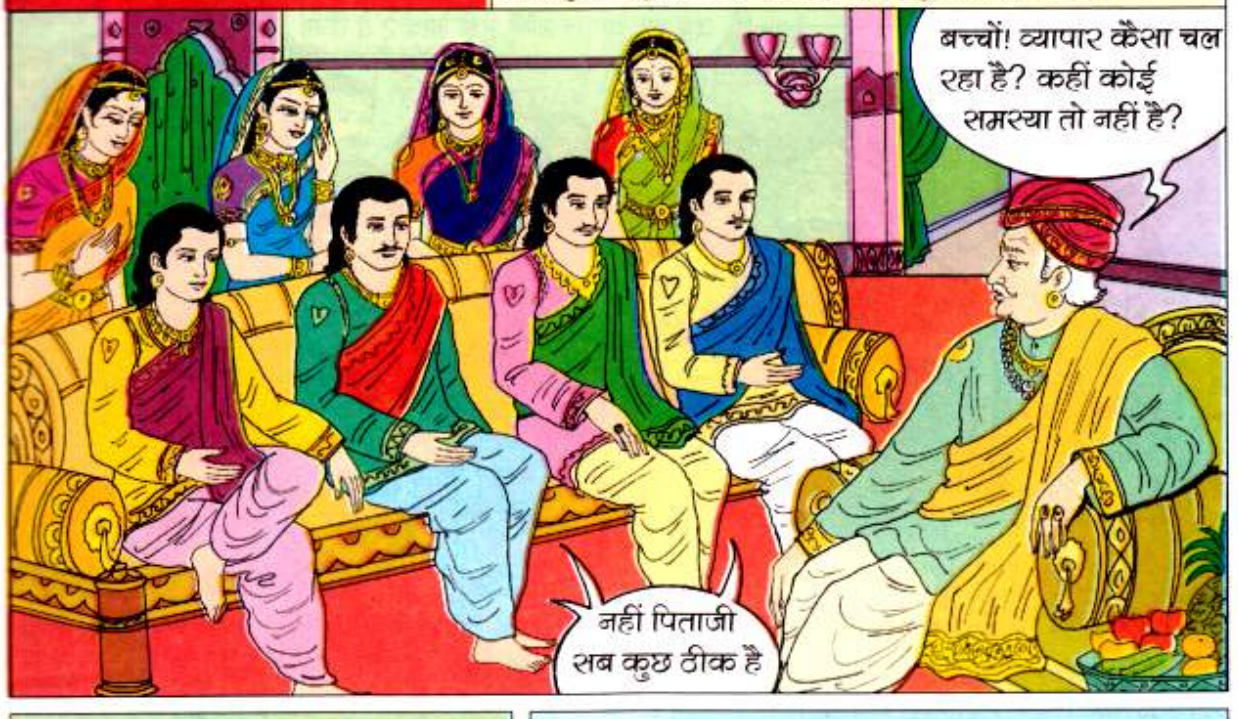

एक दिन धन्ना के मन में विचार उठा—

मैं अब वृद्ध हो गया हूँ। न जाने कब साँसें छूट जायें। अपने जीवन काल में ही मैं परिवार की जिम्मेदारियों का बँटवारा इस प्रकार कर दूँ, कि मेरी मृत्यु के बाद भी परिवार में प्रेम और समृद्धि बनी रहे।

यह सोचकर सेठ ने सबसे पहले घर की जिम्मेदारी पुत्र-वधुओं को सौंपने का निश्चय किया। किन्तु काम का बँटवारा किस प्रकार हो, वह यह सोचने लगा—

धन्ना ने उनकी योग्यता जाँचने के लिये एक मनोवैज्ञानिक तरीका अपनाया।

कुछ दिन बाद धन्ना ने अपने समस्त परिजनों को एक विशाल प्रीतिभोज दिया। भोज के बाद परिजनों के समक्ष उसने अपनी पुत्र-वधुओं से कहा—

आज मैं तुम चारों को धान के पाँच-पाँच दाने दे रहा हूँ। इन्हें सम्भालकर रखना। मैं जब भी वापस माँगूँ मुझे लाकर दे देना।

पुत्र-वधुओं ने ससुर से सम्मानपूर्वक दाने ले लिये और अपने-अपने कमरों में जाकर विचार करने लगीं।

पहली पुत्र-वधु उज्झिका अपने ससुर के इस व्यवहार पर मन ही मन हँसने लगी—

ये धान के पाँच दाने सम्भालकर रखने से क्या फायदा, घर में अनेक कोष्ठागार धान से भरे पड़े हैं। जब ससुर जी माँगेंगे मैं दे दूँगी।

उसने उन दानों को फेंक दिया।

दूसरी पुत्र-वधु भोगवती ने सोचा—

ससुर जी ने जब इतना बड़ा समारोह करके दाने दिये हैं, तो जरूर कोई बात होगी। हो सकता है यह कोई सिद्ध पुरुष का प्रसाद ही हो। इन्हें तो खा लेना चाहिये।

और भोगवती ने धान के दाने छीलकर खा लिये।

तीसरी बहू रक्षिका का मन भी कुछ इसी तरह के विचारों में लगा था—

ससुर जी ने इन्हें सुरक्षित रखने को कहा है तो अवश्य ही यह चमत्कारी दाने होंगे।

वह कुछ अधिक समझदार थी, उसने दाने एक मखमली कपड़े में बाँधकर अपनी तिजोरी में रख दिये।